शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिंदी कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन

डॉ.उषा बगेड़िया
उज्जैन, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

साहित्य समाज का दर्पण होता है, इसलिये तत्कालीन साहित्य में भी वही जीवन उभरकर आया जिसे तब का मनुष्य भोग रहा था। समाज चाहे वह नगरीय हो या ग्रामीण , साहित्य के क्षेत्र से कोई भी पक्ष अछूता नहीं रह सकता। उसकी परिधि में सब कुछ समाविष्ट हो जाता है। साहित्यकार को जित ना ग्रामीण-जीवन, परिवेश, रीति-रिवाज, संस्कृति, बोली रहन-सहन, वेश-भूषा, आचार-व्यवहार प्रभावित करते हैं, उतनी नगरीय संस्कृति नहीं। विभिन्न कहानीकारों ने उन्हीं ग्रामीण जीवन की झांकी को अपनी कहानियों में अभिव्यक्ति दी है। ये कहानियाँ मन को स्पर्श किये बिना नहीं रहती। गद्य विधा की इस लघु विधा को आधार बनाकर हिन्दी कथाकार निरंतर ग्रामीण परिवेश को अपनी विचाराभिव्यक्ति का माध्यम बनाते रहे हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

कई कहानीकारों ने अपनी कहानियों ग्रामीण जीवन व उनकी समस्याओं को प्रस्तुत किया है। नये कहानीकार किसी न किसी रूप में समाज के प्रति अपना उत्तरदायित्य समझ ते हैं । उन्होंने व्यापक सामाजिकता को अपनी रचना में ग्रहण किया है। वे अपने उस यथार्थ संघर्षरत जीवन की और मुड़े, जहाँ की जीवन डोर से उनकी मूल चेतना से बँधी थी। उनका गाँव उनकी जन्म-भूमि , उनका कस्बा और अंचल जिनकी सामाजिक परिस्थितियों से उ नका जीवन्त सम्बन्ध है। उन्होंने अपने उसी जीवन की नयी उभरती हुई वास्तविकता को उसके पूरे परिवे श में ग्रहण किया। 'रेणु', मार्कण्डेय, शिवप्रसादसिंह, पान-फूल , महुए का पेड़, कर्मनाशा की हार, कोसी का घटवार, जिन्दगी और जोक , पंचपरमेश्वर, 'चोरी' 'जंगली बूटी', आदि कहानी संग्रहों की प्रतिनिधि कहानियों की यही प्रेरणा भूमि है। जड़ता, असफलता शोषण अन्धकार से जीवन और सूनेपन में आषा और जीवन-मूल्य का संकेत। अपने अनुभव किये हुए जीवन और समाज में जहाँ रूही भी जिस स्तर से जो भी कुछ जितना मूल्यवान है, विकासोन्मुख है, उसे समूचे परिवे श के भीतर से पकड़ना और उसे जिन्दगी के व्यापक सन्दर्भ में देखना ही इनका उद्देश्य है।

भूख और गरीबी की असह्य वेदना में जीते हुए भी ग्राम्यजन एक संयुक्त परिवार की भांति एक दूसरे के दुख-सुख के साथी हैं, पारस्परिक मैत्री, आत्मीयता और सौहार्द्र के संस्कार अभी इनमें शेष है। बच्चे , बूढ़े, युवा सभी परम्परा हिल मिलकर रहते हैं। सुख-दुख में छोटे-मोटे कलह को भूलकर सब एक्य है। सम्बन्धों में अनन्त स्नेह और वत्सल्य रहता है। फणी श्वरनाथ रेणु की की कहानी 'तीसरी कसम' ग्रामीण परिवेश की आत्मीयता, जीवन्तता, उर्जा और ऊष्मा के परिचायक इन कथाकारो के पात्र निश्चित ही जीवन के प्रति गहरे विश्वास और आस्था के बोधक हैं। इस कहानी का हीरामन, समाज के उस सामान्य व्यक्ति का प्रतिनिधि है , जो ग्रामीण

परम्पराओं और समस्याओं दोनों से एक साथ जूझ रहा है।

कथाकार एक व्यापक आयाम को लेकर चला है। 'हीरामन' के जीवन की विषम स्थिति याँ समस्त विसंगत मूल्यों की ओर संकेत करती हुई मानवीय संवेदना को उभारती है तो महुआ घटवारिन की कथा के माध्यम से लेखक महाजनी संस्कृति का चित्र अंकित कर पूंजीवादी व्यवस्था से ग्रस्त जीवन की पीड़ा उजागर करता है। गाडीवान हीरामन का हीराबाई के प्रति आकर्षण और आकर्षणजन्य चेतना की द्वंद्वग्रस्त स्थिति को जिस सजीवता से कथा में चित्रित किया गया है वह न केवल आधुनिकता बोध उत्पन्न व्यक्ति की मानसिकता का चित्र है, अपितु परिवेशगत जटिल , सघन और व्यापक संक्रान्त मूल्य स्थितियों का परिचायक है। आदिम रस गंध को संजोए हीरामन का अन्तर्मन जिस रिक्तता और अकेलेपन के संसार में बार-बार लौट आता है। उसका चित्रण, बड़ी आत्मीयता और रामात्मक तल्लीनता के साथ रेणुजी ने इस कथा में किया है। उसकी वस्तु व चरित्र नये है , परिवेश नया है , उसमें जीने वाले पात्रों की प्रतिक्रिया का स्वभाव और जीवन को देखने का तरीका, कुल मिलाकर उनकी संवेद नाएँ, असाधारण और नयी हैं।

भैरवप्रसाद गुप्त की 'घुरदुआ' में सामाजिक मूल्यों का हमास जमींदारों के अत्याचार से पीड़ित मृतपायः 'घुरदुआ' अपने परिश्रम, सहृदयता और सेवाभाव से नया जीवन पा लेता है उसे आश्रय प्रदान करने वाली, समाज की तथाकथित अस्पृश्य हरिजन जाति, मानवीय सम्बन्ध मूल्यों की ही संवाहक है। इनके उपकार के बोझ तले दबा 'घुरदुआ' अपने हँसमुख परिश्रमी और विनोदी स्वभाव के कारण ही, 'लड़कों का खिलोना, जवानों का मसखरा और बूढ़ों' निर्बलो और औरतों का सहायक बन गया। जमींदार के बलात्कार की शिकार मैगरा की पत्नि की वेदना , परिवार के प्रति उसकी सहानुभूति और सहभागिता ये सभी स्थितियां पारस्परिक रागात्मक सम्बन्ध मूल्यों को ही उजागर करती हैं। 'मार्कण्डेय की कहानी ' 'दाना-भूसा' में व्यवसाय के आधार पर किया गया सनातन जाति वर्ग विभाजन नष्ट हो गया और यंत्रो के आते ही ठाकुर, ब्राहमण सब तो जोतने लगे। ट्रेक्टर के उपयोग द्वारा एक ही दिन में सारे गाँव का खेत जोत-बो देने की संभावना ने कितने ही मजदू रों की मजदूरी छीनकर उन्हें बेकारों की पंक्ति में खड़ा कर दिया। काम की तलाश में गाँव के लोग शहरों का रूख करने लगे है और दो जून रोटी के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं। किसी भी तरह पेट भरना चाहते है। फणीश्वरनाथ रेणु की 'रसप्रिया' में मशीनी सभ्यता की तीव्र गति ने प्रकृति के अंचल से दूर, नीरस संवेदना, शून्य जीवन प्रदान किया । परिणामस्वरूप जीवन के मधुर संगीत की सुरावली, भावुक, रसभरी, सहृदय दृष्टि बीते युग की गाथा बन गयी। अब न कही वर्षा में बारहमासा सुनाई पड़ता है और न ही चिलचिलाती धूप में विराह, चांचर और लगनी का स्वर सुनाई देता है। जीवन की सहजता , सरलता आर रसमयता अब यंत्रों के नये संसार में लुप्त हो चुकी है। " जेठ की चढ़ती दोहपरी में खेतों में काम करने वाले भी अब गीत नहीं गाते हैं। कुछ दिनों के बाद कोयल भी कूकना भूल जायेगी क्या? ऐसी दोपहरी में चुपचाप कैसे काम किया जाता है। पांच साल पहले तक लोगों के दिल में हलास बाकी थी। पहली वर्षा में भीगी हुई धरती के हरे-भरे पौधो से एक खास किस्म की गंध

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

निकलती है। तपती दोपहरी में मोम की तरह गल उठती थी रस की डाली।"

प्रकृति से साहचर्य के अभाव में न केवल जीवन मानव के भीतरी रससिक्त बिन्दु भी सोख लिए गये हैं। सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की 'कच्ची सड़क' में गाँव के सीधे सरल ग्रामीणों को दे श की प्रगति और खुद की महत्ता बनाने वाले राजनीति ही है। इन्हीं के माध्यम से विनोबा भावे के श्रमदान का प्रचार गाँव में किया गया। ग्रामोद्योगो की महत्ता समझायी गयी। "महात्मा श्री कह गये है, ग्रामाद्योग से ही देश का कल्याण होगा । गाँववालों का हर काम अपने पैरो पर खड़ा होकर करना चाहिये । अपने गाँव को स्वर्ग बनाओ, सारा देश स्वर्ग हो जायेगा ।"

गाँव का हर आदमी अगर एक-एक ईट रखे तो देखते-देखते एक बहुत बड़ा किला तैयार हो सकता है । सरकार आपकी है , आपकी ही तरह गरीब है । उससे यह उम्मीद नहीं करनी चाहिये कि सारा काम वह खुद करेगी , कर भी नहीं सकती । आप उसके काम में हाथ बँटाये । अपने गाँव की जरूरत का काम मिल जुलकर खुद कर ले ।" गाँव के सीधे साधे लोग अधिकारियों के झूठे आश्वासनों पर विश्वास कर लेते हैं। इस तरह के आश्वासन जो कभी भी पूरे नहीं होते और गाँव के गरीब लोग और भी पिछड़ते जाते हैं। उनका सरकार पर से विश्वास उठता जा रहा है। राजनीतिक भ्रष्टाचार से गाँव के लोगों का विश्वास मूल्य खण्डित हो रहे हैं। इस विश्वास पर कि यदि गाँव के लोग आठ मील की सड़क श्रमदान के द्वारा पक्की करा दे तो बाकि सड़क सरकार पक्की बना देगी। सारा गाँव एकजुट होकर सड़क बनाने में लग गया। गाँव के श्रमदान से सड़क पक्की बन जाती है लेकिन उसका लाभ जंमीदार और उच्चवर्गीय व सम्पन्न व्यक्ति उठाते हैं। निर्धन ग्रामीण और गाड़ीवान इस सारे तंत्र जाल को समझ ही नहीं पाते हैं, उनके ही श्रम का फल उन्हें यह मिला कि सड़क बनते ही मशीनी संस्कृति और धन की प्रभुता के बीच उनकी गाड़ियां और बैल कुचल दिये जाते हैं। उनकी रोजी-रोटी छिन गयी , बैल बिक गये , गाड़ियां बेकार हो गयी और सरपंच के दरवाजे के आगे ट्रक खड़ी हो गयी।

निष्कर्ष

प्रगति और समृद्धि की इस परियोजन तथा आधुनिक संसाध नों ने ग्रामीणों के चिरपरिचित व्यवसाय छीन लिये। गाँव की समृद्धि की आड़ में धनाढ्यों का स्वार्थ सिद्ध होता रहा। अमीर और अमीर हो गये, और गरीब और गरीब व बेबस हो गये और इसी कारण आज भी ग्रामीण अपना पेट भरने के लिये इन्हीं का मुहं देखते हैं। इसी कारण ग्रामीण जीवन के विकास के लिये निर्धारित अन्य परियोजनायें भी व्यावहारिक रूप में लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाती हैं। केवल मुट्ठी भर नेताओं, अधिकारियों और सम्पन्न व्यक्तियों को लाभ पहुंचाकर यह परियोजना निर्धन और असमर्थ असहायजन के स्वप्न , आशा-आकाक्षाएँ सभी छिन्न-भिन्न कर दिये। उनका जीवन ज्यों का त्यों शापग्रस्त बना हुआ है।

संदर्भ ग्रन्थ

1- नयी पीढ़ी की उपलाधियाँ. बारह नयी कहानियाँ , डॉ..धनन्जय

2-भैरवप्रसाद गुप्त, धुरधुआ

3- मार्कण्डेय, मधुपुर के सिवाय का एक कोन, दाना-भूसा तथा अन्य कहानियाँ

4- आधुनिक परिवेश और अस्तित्ववाद , डॉ..शिवप्रसाद सिंह

5- जैनेन्द्र की श्रेष्ठ कहानियाँ 'चोटी'

6- सर्वेश्वरदयाल सक्सेना , मास्टर श्यामलाल गुप्ता , कच्ची सड़क